हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-७ अङ्क-१ अगस्त, २०१०

सम्पादकीय

भारतीय स्वतंत्रता की ६३वीं वर्षगाँठ

इस महीने की १५ तारीख़ को अँग्रेज़ी साम्राज्य से स्वतंत्रता प्राप्त किये हुए भारत को ६३ वर्ष हो जायेंगे। इन ६३ वर्षों में भारत ने कई क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। प्रजातंत्र की जड़ें देश में काफ़ी गहरी हो चुकी हैं और आज जब विश्व आर्थिक संकटकालीन स्थिति से गुज़र रहा है, विकसित देशों की तुलना में, भारत में आर्थिक विकास की दर कहीं अधिक है। भारतीय उच्च मध्यम वर्ग की क्रय-क्षमता, आस्ट्रेलिया जैसे विकसित देशों के समान है। विदेशों में बसे भारतीय मूल के अनेक व्यक्ति नियमित रूप से भारत धन भेजते रहते हैं। इसके अतिरिक्त, भारत से पदार्थों तथा सेवाओं के निर्यात के कारण, देश में विदेशी मुद्रा की कमी नहीं है। इसका यह मतलब नहीं कि भारत से ग़रीबी दूर हो गई है। आज भी भारत की जनसंख्या के एक बड़े भाग के लिये ग़रीबी तथा वस्तुओं के बढ़ते हुए दाम, चिंता का विषय हैं। दलितों तथा पिछड़ी जातियों के लिये नौकरियों में आरक्षण नीतियों के कारण इन जातियों की स्थिति में उल्लेखनीय प्रगति हुई है परंतु, इन नीतियों का एक अवांछनीय परिणाम यह हुआ है कि शिक्षा तथा व्यावसायिक क्षेत्रों के स्तरों में गिरावट आयी है और चुनावों में जाति की भूमिका अनावश्यक रूप से महत्वपूर्ण हो गई है। सुधी पाठकों को स्वतंत्रता-दिवस तथा रक्षा-बंधन व रमज़ान की शुभकामनाएँ। इस महीने, मेल्बर्न शहर की स्थापना की १७५वीं वर्षगाँठ भी है। इस अवसर पर सभी मेल्बर्न वासियों को बहुत-बहुत बधाई।

इस अङ्क के साथ हिन्दी-पुष्प ७वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। सभी लेखकों तथा पाठकों को उनके सहयोग के लिये अनेक धन्यवाद। इस अङ्क में भारतीय स्वतंत्रता-दिवस से सम्बंधित रचनाएँ हैं। इसके अतिरिक्त, 'पदोन्नति' नामक कहानी का आठवाँ भाग है। साथ में 'अब हँसने की बारी है' तथा 'सूचनाएँ' स्तम्भ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

प्रकाशन सम्बंधी सूचनाए

हिन्दी-पुष्प का उद्देश्य ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना है। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाता है। हिन्दी-पुष्प में प्रकाशित रचनाओं में लेखकों के विचार उनके अपने होते हैं, उनके लिये सम्पादक या प्रकाशक उत्तरदायी नहीं हैं। हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से 'हिन्दी-संस्कृत' फ़ांट में रचनाएँ भेजें तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।
कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजें-

Editor, Hindi-Pushp, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121).
ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है -
dsrivastava@optusnet.com.au

अपनी रचनाएँ भेजते समय, अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखें।

आज़ादी की सालगिरह

- किशोर नंगरानी, कैनबरा

आज़ादी की
साठवीं सालगिरह पर
स्वर्गवासी गांधी और नेहरू ने
भारत भ्रमण का कार्यक्रम बनाया
पहला पड़ाव
पटना
मुलाक़ात हुई
खादीधारी नेता से
नेता ने
इन महामूर्तियों को देख
साष्टांग प्रणाम किया
बोला
"गांधी बाबा
मैं आपकी परम्पराओं
आपके आदर्शों को
आज भी जीवित रखे हुए हूँ
आपने भाईचारे का सन्देश दिया
मैंने भाईयों
या यूँ कहें सालों समेत
करोड़ों का चारा खाया
आपने कहा
ग़रीबी दूर करो
मैंने अपनी ग़रीबी दूर कर ली
आपने
दही-दूध के रामराज का
स्वप्न देखा था
हम दूध दही क्या
रबड़ी का ही राज ले आए
आप देश की ख़ातिर जेल गए थे
हम भी आजकल जेल की
हवा खाने जा रहे हैं
वैसे अब आप आए ही हो
कुछ जुगाड़ लगा कर
ये केस रफ़ा-दफ़ा करवा दो
आपकी दो-चार और मूर्तियाँ
खड़ी कर देंगे।"

नेहरू बोले,
"बापू
यह आधुनिक गांधीवाद है
उजली खादी काली करतूतें
छिपाने के लिए पहनता है
नेता जी ने कहा था
तुम मुझे ख़ून दो
मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा
आज का नेता कहता है
तुम मुझे वोट दो
मैं तुम्हारा ख़ून चूसूँगा
इसका सत्य सत्ता है
अहिंसा में उतनी देर ही
विश्वास करता है
जब तक इसकी बात मानो
भलाई इसी में है
यहाँ से जल्दी से निकल चलो।"
बाहर निकले
सामने
'फ़्रीडम फ़ाइटर' पेंशन' का
सरकारी दफ़्तर था
"अब यहाँ कुछ दिन रहना है
गुज़ारे के लिए कुछ पैसे ले लें।"
बाबू ने पान चबाते हुए पूछा
"नाम"
"मोहनदास गांधी"
"बाप का नाम"
"कर्मचन्द गांधी"
बाबू हँसा, बोला
"यहाँ जो आता है
वह अपने आप को
गांधी, नेहरू तथा सुभाष ही
समझता है
ख़ैर पेशा बताओ।"

काव्य-कुंज

"आज़ादी की लड़ाई
नमक तोड़ो, भारत छोड़ो
आंदोलनों में भाग लिया।"
बाबू ने पान की पीक थूकते हुए कहा
"मुझे हिस्ट्री का पाठ सिखाने की
ज़रूरत नहीं
इतनी हिस्ट्री आती तो
मैं आई.ए.एस. अफ़सर होता
यहाँ कलम न घिस रहा होता
जेल जाने का प्रमाण-पत्र है"
"मैं जेल देश की आज़ादी
के लिए गया था
प्रमाण-पत्र लेने नहीं"
अगला सवाल
"ज़िंदा रहने का प्रमाण-पत्र है"
गांधी बोले,
"सामने खड़ा हूँ
और कौन-सा प्रमाण-पत्र चाहिए"
बाबू गांधी की नादानी पर हँसा
"तुम्हारा केस मुश्किल लगता है
मगर बाबू श्यामलाल सक्सेना ने
ऐसों को पेंशन दिलाई है जो
सन् सैंतालीस में,
माँ की गोद में दूध पी रहे थे
तुम शक्ल-सूरत से
भले दिखते हो
'फ़्रीडम-फ़ाइटर' भी लगते हो
कुछ खरचा-पानी करो
पेंशन का भी इंतज़ाम हो जाएगा।"
नेहरू क्रुद्ध हुए,
दीवार पर गाँधी जी का फ़ोटो लगाया है
और घूस माँगते हो!"
बाबू बोला
"दीवार पर गांधी जी का
फ़ोटो लगाना
सरकारी मज़बूरी है
मेरा रिश्वत खाना
मेरी 'ट्रिस्ट विद डेस्टिनी' है
अगर तकलीफ़ होती है
गांधी का फ़ोटो
कोट से ढक देता हूँ
अब कुछ निकालो।"

अन्त में उनकी मुलाक़ात
मोबाइल फ़ोनधारी यप्पी
नौजवान से हुई
उसने गांधी जी को
'बेन किंग्सले' समझ
ऑटोग्राफ़ माँगा
जब उसे पता चला
गांधी जी, गांधी जी हैं
ऑटोग्राफ़ बुक वापिस माँग ली
फिर बोला,
"महात्मा गाँधी रोड पर
दस शराब की दुकानें हैं
चलकर कहीं आज़ादी
का जश्न मनाते हैं।"
गांधी ने पूछा
"आज़ादी का सफ़र लाया
कहाँ से कहाँ तक।"
जवाब मिला
"तब भारत छोड़ो का
नारा बुलन्द हुआ था
अब भारत बुलाओ की
होड़ लगी है
तब विदेशी कपड़ों की
होली जली थी
अब
'पिज़्ज़ा हट', 'के.एफ़.सी.',
'कोका-कोला' की धूम मची है
प्रगति हुई है
चरखा कातने से
कंप्यूटर तक पहुँचे हैं
प्रगति नहीं भी हुई है
विश्व अंतरिक्ष-यात्रा कर रहा है
हमारा नेता
अब भी रथ-यात्रा कर रहा है।
आपने भारत छोड़ो का
नारा दिया था
मैं भी भारत छोड़ने के
चक्कर में हूँ
कहीं से 'यू.एस.', 'यू.के.'
या ऑस्ट्रेलिया का
वीज़ा दिलवा दें
आज ही भारत छोड़ दूँ।"

गांधी निराश हुए
नेहरू हताश हुए
पिछली बार अँग्रेज़ आये थे
दो सौ साल लगे थे
वापस भेजने में
इस बार अँग्रेज़ियत आ रही है
क्या कभी इसे वापस भेज पाएँगे?

Trial Version www.Scansoft.com

अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो

- रमेश दवे-मेल्बर्न

भारत शब्द के पीछे आभा - रत छुपा हुआ है जिसका अर्थ उस राष्ट्र से है जो हमेशा से ज्ञान-विज्ञान के प्रकाश याने आभा की खोज में रत अर्थात् लीन रहा है। सदियों पुराने इस देश में शक, हूण से लेकर मुगल और अंग्रेज़ तक कई विदेशी आक्रमणकारी और शासक आए लेकिन अंतत: या तो उन्हें जाना पड़ा या फिर वे यहीं के हो गए। जो भारत के ही होकर रह गए वे यहाँ की सभ्यता-संस्कृति से प्रभावित हुए और जो गए- वे या तो लुटेरे थे या फिर जाने को विवश थे। ब्रिटिश साम्राज्यवादी, जिन्होंने कोई दो सौ वर्षों तक भारत पर शासन किया, इसी श्रेणी में आते हैं।

ब्रिटिश व्यापारी "ईस्ट इंडिया कम्पनी" के नाम से आए थे तो व्यापार करने, परन्तु जब उन्होंने यह देखा कि यह देश तो सोने का अण्डा देनेवाली मुर्गी है तो फिर तत्कालीन देशी राजे-रजवाड़ों को एक दूसरे के ख़िलाफ़ लड़ा-भिड़ा कर चट-पट देश की सत्ता हथिया ली। मनमाने तौर पर क़ायदे-क़ानून बनाकर देश को बेतहाशा लूटना ही उनका चरम लक्ष्य रहा। विभिन्न धर्मों-जातियों-वर्णों-सम्प्रदायों में बँटे भारतीय समाज पर शासन करने में ब्रिटिशों को ज़्यादा कठिनाई इस कारण से भी नहीं आयी कि इनकी "बाँटो और राज करो" नीति का मीर जाफ़रों और जयचन्दों ने पुरज़ोर समर्थन किया। कुछ तो इन गद्दारों के कारण और कुछ तत्कालीन विद्रोही राजे-रजवाड़ों के असंगठित प्रयासों के चलते सन १८५७ के पहले स्वाधीनता संग्राम को कुचल दिया गया।

इस विद्रोह का इतना प्रभाव तो अवश्य हुआ कि भारत के शासन की बागडोर महारानी विक्टोरिया के हाथ में आ जाने के कारण दिखावे के तौर पर ही सही, कुछ प्रशासनिक सुधार हुए। परन्तु कुल मिलाकर ब्रिटिशों की नीति देश के आर्थिक शोषण की ही रही। कालान्तर में पश्चिमी शिक्षा-पद्धति के प्रभाव से राजा राममोहन रॉय और उनके ब्रह्म समाज ने अविभाजित बंगाल में समाज सुधार आंदोलन चलाया लेकिन समाज सुधार के साथ-साथ राष्ट्रवादी विचारधारा को फैलाया। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके आर्य समाज ने। संयोगवश महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस ने भी लगभग इसी समय नमक सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आन्दोलन तथा ९ अगस्त १९४२ को "अंग्रेज़ो भारत छोड़ो" आन्दोलन चलाये जिनको भारत की आम जनता का पुरज़ोर सहयोग-समर्थन मिला। तत्कालीन काँग्रेस पार्टी में दो समूह गरम दल और नरम दल के रूप में सक्रिय थे। गरम दल में लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और विपिन चंद्र पाल थे तो नरम दल में पं० गोपाल कृष्ण गोखले प्रमुख थे। हालांकि रास्ते अलग-अलग थे परंतु मक़सद एक ही था। इधर नेताजी सुभाष और उनकी "आज़ाद हिन्द सेना" तथा अमर शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद, पण्डित राम प्रसाद विस्मिल और अश्फ़ाकुल्ला ख़ाँ सरीखे क्रांतिकारियों ने भी अपने आत्मोत्सर्ग से ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को परेशान तो कर ही दिया था लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध की विनाश लीला ने ब्रिटिशों की कमर तोड़ दी थी। अंतत: १५ अगस्त १९४७ की सुबह भारत को आज़ादी तो मिली परन्तु विभाजन रूपी अंग-भंग के साथ।

यह विभाजन हिन्दू और मुसलमान समुदायों को दो अलग-अलग राष्ट्र मानकर किया गया था। विभाजन की यह पीड़ा पंजाब (पश्चिमी पाकिस्तान और अब सिर्फ़ पाकिस्तान) और बंगाल (पूर्वी पाकिस्तान और अब बाँग्लादेश) प्राँतों को झेलनी पड़ी जहाँ लाखों निर्दोषों का क़त्ले-आम किया गया। इस से स्पष्ट है कि हमें आज़ादी की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है। लाखों लोगों के शहीद होने से मिली इस विरासत के सम्बंध में फ़िल्म "हक़ीकत" का एक गीत अनायास ही याद हो आया है-

कर चले हम फ़िदा जान
ओ तन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों

देश को आज़ाद कराने वाले और इसकी रक्षा करने वाले तो अपना काम कर गए या बखूबी कर रहे हैं, क्या बाक़ी लोगों का कोई फ़र्ज़ नहीं बनता? ये जाने-अनजाने अमर शहीद भारत को हमारे हवाले छोड़ गए हैं। आइए हम सभी देशवासियों को साथ में लेकर सफलता की नयी ऊँचाइयों तक ले जाकर गर्व से तिंरगा फहराएँ।

प्रवासी पूरन सिंह की भारत वापसी

-विजय तथा सुधा अग्रवाल

ऑस्ट्रेलिया के फ़ेडेरेशन बनने के पहले, 'ब्रिटिश इण्डिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी' भारत से ऑस्ट्रेलिया के बीच जहाज़ चलाया करती थी जिसमें कई भारतीय यहाँ आते थे और उनमें से कुछ यहीं रह जाते थे। उससे पहले भी, सन् १८६० के बर्क व विल्स के दक्षिण से उत्तर जाने की ऐतिहासिक यात्रा में भी भारत से मँगाए गए ऊँट और उनके चलाने वाले ४ भारतीयों के शामिल होने का उल्लेख मिलता है। ऐसे ही एक भारतीय थे पूरन सिंह, जो आज से ११० वर्ष पूर्व, आस्ट्रेलिया के विक्टोरिया प्रदेश में, मेल्बर्न से २७० किलोमीटर दूर वार्नाम्बूल नामक शहर में आ कर बस गये थे। वे उन पंजाबी फेरीवालों में से एक थे जो आज से सौ वर्षों पूर्व अपनी घोड़ागाड़ी लेकर विक्टोरिया की सड़कों पर सामान बेचा करते थे। १९४७ में भारत की आज़ादी के थोड़े ही दिन पहले उनकी मृत्यु हो गई थी। उनका दाह-संस्कार मेल्बर्न में हुआ था। उनकी अंतिम इच्छा थी कि मरने के बाद उनकी अस्थियाँ, गंगा नदी में प्रवाहित की जायें। परंतु यहाँ उनका कोई अन्य सम्बन्धी नहीं था। इसलिये उनकी यह इच्छा पूरी न की जा सकी। परंतु, उनका दाह-संस्कार करने वाली संस्था के व्यवस्थापक उनकी अस्थियाँ इस उम्मीद में अपने पास रखे रहे कि कभी कोई उनका रिश्तेदार आ कर उनकी अस्थियों को भारत ले जाएगा। यद्यपि शोधकर्ताओं के अनुसार पूरन सिंह ने करीब २३०० पाउंड की सम्पति छोड़ी थी और पंजाब के बिल्गा गाँव में उनके चार भतीजों में से प्रत्येक को ३६० पाउंड भी भेजे गये थे। परंतु ६३ वर्षों तक उन्हें लेने कोई नहीं आया।

इतने वर्षों बाद, जून २०१० में एस.बी.एस. रेडिओ के पंजाबी प्रोग्राम में जब अचानक इस बात का ज़िक्र हुआ तो भारत के सुप्रसिद्ध क्रिकेटर कपिलदेव ने आगे बढ़कर यह कार्य पूरा करने का बीड़ा उठाया। उधर खोजबीन से पूरन सिह के प्रपौत्र हरमेल उप्पल का इंग्लैंड में होने का पता चला। वे दोनों मेल्बर्न आये और पूरन सिह की अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करने की उनकी अन्तिम इच्छा पूरी करने के लिये उन्हें भारत ले गये। मेल्बर्न के सिख समुदाय के १५० व्यक्तियों व अन्य लोगों ने इस पुराने भारतीय प्रवासी को भाव-भीनी बिदाई दी।

स्वाधीनता दिवस के पुण्य अवसर पर हम सभी दिवंगत पूरन सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और उनके देश प्रेम की सराहना करते हैं। आखिर, हर एक प्रवासी भारतीय के अर्न्तमन में एक न एक दिन भारत वापस जाने की इच्छा तो रहती ही है!!

पदोन्नति* (भाग ८)

-श्रीनिवास वत्स

(आपने इस कहानी के पिछले भागों में पढ़ा कि पदोन्नति के बाद, अन्य सरकारी अधिकारियों को देख कर, सुनन्दनजी को लगा कि कुत्ता पालना बड़प्पन की निशानी है। गाँव से शहर लौटते समय सुनन्दन को गाँव की गली में एक सुंदर कुतिया (मिसेज़ फ़्लूडी) दिखायी दी, जिसे वे अपने साथ ले आये। पर उसके कारण घर में बढ़ते अप्रत्याशित ख़र्चे से परेशान हो कर उन्होंने उसे विदा करने का निश्चय किया। यह सोच कर कि कल तो यह चली ही जायेगी, एक रात पहले उसे ख़ूब अच्छी तरह से भोजन कराया। अगली सुबह सुनंदन जी चकित रह गये। कमरे में फ़्लूडी के अतिरिक्त, चार नवजात पिल्ले घूम रहे थे। जल्द ही यह ख़बर सारे मोहल्ले में फ़ैल गई। श्रीमती रस्तोगी बोलीं - " इस काले पिल्ले को बड़ा होने पर हमें दे देना।; देखो तो कितना आकर्षक है। लीजिये, अब आगे की कहानी पढ़िये - सम्पादक)

गिरजा जैन अपनी छोटी बिटिया के साथ बधाई देने आईं। उनकी बेटी को पिल्ले इतने अच्छे लगे कि वे वहाँ से जाने को तैयार नहीं हुईं। बोली- "मैं तो सारा दिन आँटी के पिल्लों से खेलूंगी।"

शाम को सुरोधा जी एवं मेजर कृष्णमूर्ती एक पशु चिकित्सक को साथ लेकर सुनंदन जी के घर उपस्थित हो गए। आते ही मेजर कहने लगा-"अरे सुनंदन बाबू! आप दो दिन से सैर करने नहीं आ रहे। सब कुशल तो है? इनसे मिलिए, ये हैं हमारे पशुओं के फ़ैमिली डाक्टर सुब्रत जी! हमारे रॉकी को देखने आए थे। आजकल कुत्तों में बीमारी फैली हुई है। मैंने सोचा, मिसेज़ फ़्लूडी को भी इन्हें दिखा दें। हर महीने रोग निरोधक टीका लगा देंगे।" (क्रमश:)

महत्वपूर्ण तिथियाँ

१२ अगस्त से ९ सितम्बर तक (रमज़ान), १५ अगस्त (भारतीय स्वतंत्रता दिवस), २४ अगस्त (रक्षाबंधन), २ सितम्बर (श्रीकृष्ण जन्माष्टमी), १० सितम्बर (ईद), ११ सितम्बर (गणेश चतुर्थी)।

सूचनाएँ

१. श्री संकट मोचन महोत्सव - २०१० (रविवार, २२ अगस्त)
स्थान - डरेबिन आर्टस् ऐण्ड कल्चर सेन्टर, बेल स्ट्रीट तथा सेंट जार्ज स्ट्रीट का नुक्कड़, (मेलवे संदर्भ ३०-ई-१)
समय - दोपहर के २.०० बजे से शाम के ६.०० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।
महोत्सव के आयोजन में आर्थिक अथवा अन्य प्रकार की सहायता करने के लिये श्रीमती विनीता भाटिया से (०४१२) ७७१७७९ पर तथा अन्य जानकारी के लिए डॉक्टर सुनीला श्रीवास्तव को (०४२७) २७४४६२ पर फ़ोन कीजिये अथवा निम्नलिखित पते पर ई-मेल द्वारा संपर्क कीजिये -ashriv@gmail.com

२. उत्तरी क्षेत्र के वरिष्ठ भारतीयों की संस्था (NRISA) **का वार्षिक समारोह** (शनिवार, २८ अगस्त)
स्थान - नार्थकोट सीनियर्स हॉल, १८-ए बेंट स्ट्रीट, नार्थकोट (प्रवेश हाई स्ट्रीट द्वारा) (मेल्वे संदर्भ - ३०-डी-७)
समय - दोपहर ३.३० बजे से रात के ८.०० बजे तक
अधिक जानकारी के लिये संपर्क कीजिये - प्रोफ़ेसर संतोष कुमार (०४११) १३६ ६१२ अथवा राजेन्द्र चोपड़ा - (०४०१) ६८१ ३३०

३. इण्डियन सीनियर सिटीज़न्स एसोसिएशन ऑफ़ विक्टोरिया (ISCAV) **द्वारा आयोजित बहुसांस्कृतिक कार्यक्रम तथा जादू-प्रदर्शन (शनिवार, २८ अगस्त)**
स्थान - माउंट वेवर्ली यूथ सेन्टर, स्थान - माउंट वेवर्ली यूथ सेन्टर, ४५ मिलर्स क्रेसेन्ट, माउंट वेवर्ली (मेल्वे संदर्भ -७० ई-१)
समय - सुबह ११. ३० बजे से प्रारम्भ
अधिक जानकारी के लिये, डॉक्टर प्रेम फेकी (९६५० ९६०७) या डॉक्टर सुरेश शर्मा (९८८७ ७२८९) से संपर्क कीजिये।

अब हँसने की बारी है

१. नेता जी का बेटा

अध्यापक (नेता जी से) - आपका बेटा फ़ेल हो गया और आप लड्डू बाँट रहे हैं!
नेता जी (अध्यापक से) - इस परीक्षा में ६८ प्रतिशत बच्चे फ़ेल हुए हैं, बहुमत तो मेरे बेटे को ही मिलेगा न!

२. दिल्ली से मुम्बई की दूरी

रमेश (सुरेश से) - दिल्ली से मुम्बई की दूरी कितनी है?
सुरेश (रमेश से) - क्यों पूछ रहे हो, जाना है क्या?
रमेश (सुरेश से) - हाँ, जाना है, इसीलिये पूछ रहा हूँ।
सुरेश (रमेश से) - तीन दिन की दूरी है। मेरी पत्नी हर बार ६ दिनों में मुम्बई से दिल्ली लौट आती है। क्यों पूछ रहे हो, जाना है क्या?